IJAER/January-February 2016/Volume -5/Issue-1 ISSN: 2278-9677
International Journal of Arts & Education Research

संस्कृत साहित्य और संत कबीर की भक्ति

डॉ गोविंद राम चरोरा,

संस्कृत विभाग, महारानी श्री जया महाविद्यालय

भरतपुर, राज.

सार

कबीर के अब तक के अध्ययन का सर्वेक्षण करते हुए इस अध्ययन की आधारभूत मान्यताओं को स्पष्ट किया गया है तथा विभिन्न विद्वानों द्वारा कबीर के मूल्यांकनों का विश्लेषण किया गया है। कबीर के वंश को सदय धान्तरित योगी जाति मानने की अर्थपरिणतियों का निस्पण करते हुए इस मान्यता के औचित्य पर विचार किया गया , कबीर की भक्ति के सामाजिक अर्य की समझ के लिए उन्हें जातीय गठन की ऐतिहासिक प्रक्रिया के संदर्भ में देखने का प्रस्ताव दिया गया है। इसके साथ ही स्वामी रामानंद के संबंध की समस्या और इससे संबद्ध समस्या कबीर का जीवन समय निर्धारिण पर भी विचार किया गया है।

मुख्यशब्द: *कबीरदास के काव्य , कबीरदास की भक्ति*

परिचय

कबीर संतमत के प्रवर्तक और संत काव्य के सर्वश्रेष्ठ कवि है। विलक्षण के धनी और समाज – सुधारक संत कबीर हिन्दी साहित्य में अपना विशिष्ट स्थान रखते हैं। इनके समान सशक्त और क्रांतिकारी कोई अन्य कवि हिन्दी साहित्य में दिखलाई नहीं पड़ता है। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने कबीरदास के काव्य और व्यक्तित्व का आकलन करते हुए लिखा है कबीर की उक्तियों में कहीं कहीं विलक्षण प्रभाव और चमत्कार है। प्रतिभा उनमें बडी प्रखर थी , इसमें संदेह नहीं। कबीर की विलक्षण प्रतिभा पर आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी ने लिखा है हिन्दी साहित्य के हजार वर्षों के इतिहास में कबीर जैसा व्यक्तित्त्व लेकर लेखक उत्पन्न नहीं हुआ। भाषा पर कबीर का जबर्दस्त अधिकार था। वे वाणी के डिक्टेटर थे। उनके संत रूप के साथ ही उनका कविरूप बराबर चलता रहता है।

कबीर की जन्मतिथि के सम्बन्ध में कई मत प्रचलित है , पर अधिक मान्य मत डॉ . श्यामसुन्दर दास और आचार्य रामचन्द्र शुक्ल का है। इन विद्वानों ने कबीर का जन्म सम्वत् 1456 वि . (सन् 1389 ई .) माना है। इनके जन्म के सम्बध में कहा जाता है कि कबीर काशी की एक ब्राह्मणी विधवा की सन्तान थे। समाज के डर से ब्राह्मणों ने अपने नवजात पुत्र को एक तालाग के किनारे छोड दिया था , जो नीरू जुलाहे और उसकी पत्नी नीमा को जलाशय के पास प्राप्त हुआ। विद्वानों के मतानुसार कबीर का अवसान मगहर में सम्वत् 1575 वि . (सन् 1518 ई .) में है

कबीर की जितनी भी रचनाएँ मिलती हैं उनके शिष्यों ने इन्हें बीजक नामक ग्रन्थ में संकलित किया है। इसी बीजक के तीन भाग हैं साख , शबर और रमैनी । साखी में संग्रहित साखियों की संख्या 809 है। सबद के अन्तर्गत 350 पद संकलित है। साखी शब्द का प्रयोग कबीर ने संसार की समस्याओं को सुलझाने के लिए

किया है। सबद कबीर के गेय पद है। रमैनी के ईश्वर सम्बन्धी , शरीर एवं आत्मा उद्धार सम्बन्धी विचारों का संकलन है। कबीर के निर्गुण भक्ति मार्ग के अनुयायी थे और वैष्णव भक्त थे। रामानंद से शिष्यत्व ग्रहण करने के कारण कबीर के हृदय में वैष्णवों के लिए अत्यधिक आदर था। कबीर ने धार्मिक पाखण्डों , सामाजिक कुरीतियों , अनाचारों , पारस्परिक विरोधों आदि को दूर करने का सराहनीय कार्य किया है। कबीर की भाषा में सरलता एवं सादगी है , उसमें नूतन प्रकाश देने की अद्‌भुत शक्ति है। उनका साहित्य जन - जीवन को उन्नत बनाने वाला , मानवतावाद का पोषाक , विश्व - बन्धुत्व की भावना जाग्रत करने वाला है। इसी कारण हिन्दी सन्त काव्यधारा में उनका स्थान सर्वश्रेष्ठ माना जाता है।

विद्वानों के बीच कबीर पर बहस का प्रमुख मुददा यह बना रहा है कि उनकी भक्ति एवं उससे व्यन्त सामाजिक विचार विदेशी पद्धति के हैं , पा ' तो पीसदी भारतीय परंपरा के 1 इस बहस का मूल ढांचा कुल मिला कर भारत से सांस्कृतिक विकास को धार्मिक दैत मात्र का परिणाम समझने का रहा है। इस ढांचे में विदेशीपन इस्लाम से जुड़ता है , व भारतीय परंपरा हिंदु या पीठ धर्म से। कबीर की भक्ति को विदेशी पद्धति मानने वाले विद्वान उनके तत्ववाद पर सामी एप्रवरवाद और प्रेमतत्व पर तमनुफका प्रभाव देखते हैं तो कबीर को श्सी पीसदी भारतीय परंपरा में स्थापित करने वाले विद्वान भक्ति आंदोलन के स्वरूप विकास में ही इस्लाम का विशेष योगदान नहीं मानते। दोनों वाँ के विद्वानों के लिए जातीयता की अवधारणा धर्ममत से निर्धारित होती है।

ईश्वर के समक्ष सबकी समानता

भक्ति आन्दोलन का यह एक ऐसा वैचारिक आधार है जिसके माध्यम से वह ऊँच - नीच एवं जाति और वर्ण - भेद के आधार पर विभाजित मानवता की समानता को एक नैतिक और मजबूत आधार प्रदान करते हैं। समाज में व्याप्त असमानताओं का आधार भी ईश्वर की भक्ति को बनाया गया था - भक्ति संतों ने उन्हीं के हथियारों से उन पर वार किया और कहा कि ' ब्रह्म ' के अंश सभी जीव हैं तो फिर यह विषमता क्यों ? कि किसी को ईश्वर उपासना का सम्पूर्ण अधिकार और किसी को बिल्कुल नहीं , इतना ही नहीं इसी आधार पर समाज को रहन - सहन , खान - पान , छुआ - छूत एवं आर्थिक विषमताओं से विभाजित किया गया था। भक्तों ने चाहे वे निर्गुण हों चाहे सगुण सभी ने ईश्वर के समक्ष मानव मात्र की समानता को एक स्वर से स्वीकार किया।

उद्देश्य

1. भारतीय इतिहास में एक महत्वपूर्ण घटना के रूप में भक्ति आन्दोलन को देखा - परखा जाता है।

2. कबीर संतमत के प्रवर्तक और संत काव्य के सर्वश्रेष्ठ कवि है।

जाति - प्रथा का विरोध

' जाति प्रथा ' समाज की एक ऐसी बुराई थी जिसके चलते समाज के एक बड़े वर्ग को मनुष्यत्व के बाहर का दर्जा मिला हुआ था। ' अछूत ' , ' शूद्र ' ' अन्त्यज ' , ' निम्नतम ' श्रेणी के मनुष्यों का ऐसा समूह था जिसे मनुष्यत्व की मूलभूत पहचान भी प्राप्त नहीं थी। ब्राह्मण , क्षत्रिय , वैश्य वर्ग में भी जातिगत श्रेष्ठता और सामाजिक व्यवस्था में उच्च श्रेणी के लिए संघर्ष होते रहते थे। भक्ति संतों ने मनुष्यता के इस अभिशाप से मुक्ति की लड़ाई पूरी ताकत से लड़ी। कबीर जब " ना

हिन्दू ना मुसलमान ' की बात करते हों या किसी जाति विशेष के विशिष्ट अधिकारों पर चोट करते हों जो उन्हें जातिगत आधार पर मिले हों तो वे वास्तव में जाति प्रथा की इसी वैचारिक धरातल को तोड़ना चाहते हैं। ' जाति ' विशेष का विरोध या जाति को खत्म करने की बात नहीं की गई , बल्कि ' जाति ' और ' धर्म ' के तालमेल से उत्पन्न मानवीय विषमताओं और ह्रसमान जीवन मूल्यों को पुनः प्रतिष्ठित करने के लिए जाति के आधार मिले विशेषाधिकारों को खत्म करने की बात भक्ति आन्दोलन ने उठाई।

जाति प्रथा के आधार पर ईश्वर की उपासना का जो विशेष अधिकार ऊंची जाति वालों ने अपने पास रख रखा था और पुरोहित तथा क्षत्रियों की साँठ – गाँठ के आधार पर जिसे बलपूर्वक मनवाया जाता था। उसे तोड़ने का अथक प्रयास भी भक्ति आन्दोलन ने किया और कहा कि ईश्वर से तादात्म्य के लिए मनुष्य के सद्गुण – प्रेम , सहिष्णुता , पवित्र ह्रदय , सादा – सरल जीवन और ईश्वर के प्रति अगाध विश्वास आवश्यक है न कि उसकी ऊँची जाति या ऊँचा सामाजिक , राजनैतिक या आर्थिक आधार।

धर्म निरपेक्षता

धर्मनिरपेक्षता का मतलब यह नहीं है कि व्यक्ति किसी धर्म - विशेष से कोई सम्बन्ध न रखे। बल्कि इसका अर्थ यह है कि अपने धर्म पर निष्ठा रखते हुए भी व्यक्ति दूसरे धर्मों का सम्मान करे तथा अपनी धार्मिक निष्ठा को दूसरे धर्मों में निष्ठा रखने वालों से जुड़ने में बाधा न बने। धर्मनिरपेक्षता एक जीवन मूल्य है जिसमें सहिष्णुता का गुण समाहित है। वर्ग , वर्ण , सम्प्रदाय तथा धर्मगत बन्धनों की अवहेलना करते हुए मनुष्य मात्र को ईश्वरोपासना का समान अधिकारी घोषित भक्ति आन्दोलन ने एक ऐसी धर्मनिरपेक्ष विचारधारा को जन्म दिया जो उस समय तो क्रांतिकारी थी ही आज भी इस विचारधारा को भारतीय समाज व्यावहारिक स्तर पर नहीं अपना पाया है।

भक्ति आन्दोलन के सभी सूत्रधारों में यह जीवन - मूल्य कमोवेश पाया जाता है। कबीर ने तो मानो इस विचारधारा को जन - जन तक पहुँचाने का बीड़ा उठा रखा था। वे जानते थे कि इसे पाना आसान नहीं है , नहीं होगा तभी उन्होंने शर्त रखी जो अपना ' सर ' काटकर रखने की क्षमता रखता हो या अपना उन्होंने फूंकने की क्षमता रखता हो वही कबीर की इस धर्मनिरपेक्ष विचारधारा के साथ चल सकता है।

सामाजिक उत्पीड़न और अंधविश्वासों का विरोध

भक्ति आन्दोलन ने एक लम्बी लड़ाई - अपने प्रारंभ से अंत तक - लड़ी वह थी , सामाजिक उत्पीड़न और जन सामान्य में व्याप्त अंधविश्वासों के विरुद्ध। कबीर इस युद्ध के उद्घोषक थे। उन्होंने इसे स्वयं की स्वयं को दी हुई चुनौती के रूप में स्वीकार किया और अपने तरकश के सभी तीर चलाए , तुक्का नहीं लगाया। कहीं - कहीं तो ऐसा लगता है कि कबीर अकेले खड़े हैं सामने चुनौती झेलने वाला कोई नहीं पर लड़ाई किसी व्यक्ति या शासक के विरुद्ध नहीं थी। लड़ाई थी उस गलीच विचारधारा ' और ' सोच ' के विरुद्ध जिसके आधार पर सदियों से मानवता का शोषण किया जा रहा था उसे उत्पीड़ित किया जा रहा था और मनुष्य जिसे अपनी नियति मानकर जी रहा था। कबीर ने कहा कि " यह हमारी नियति नहीं , हमारा शोषण है , मानवता के प्रति अभिशाप है , किसी धर्म में इसका कोई आधार नहीं है। ' नियति और धर्म के नाम पर थोपे गए अंधविश्वासों को उन्होंने धर्म और ईश्वर के आधार पर ही खण्डित किया और ज्ञान का प्रकाश प्रकाशित किया। इसी कारण उन्होंने सच्चे गुरू का महत्व प्रतिपादित किया -

साहित्य की समीक्षा

संतकाव्य परंपरा के सर्वप्रमुख कवि कबीर थे। वे अपने समय के सच्चे प्रतिनिधि थे। वे एक सच्चे साधक , निश्ठावान भक्त , उच्चकोटि के कवि तथा प्रगति लि समाज सुधारक थे। हजारी प्रसाद द्विवेदी ने उनका वर्णन इस प्रकार किया है

" ऐसे थे कबीर। सिर से पैर तक मस्तमौला , स्वभाव से फक्कड़ , आदत से अक्खड़ , भक्त के सामने निरीह , भेशधारी के आगे प्रचंड , दिल के साफ , दिमाग से दुरुस्त , भीतर से कोमल , बाहर से कठोर , जन्म से अस्पृश्य कर्म से वंदनीय थे। "

कबीर अपूर्व प्रतिभासंपन्न कवि थे। इनके काव्य में भाव और विचार , तथ्य और कल्पना , भाशा और अलंकार का आ चर्यजनक रूप में समन्वय हुआ है। इन्होंने मध्य युग में वैसा ही महान् कार्य किया जैसा आधुनिक युग में स्वामी दयानंद , विवेकानंद आदि ने किया। डॉ . सरनामसिंह के अनुसार , ' जिस प्रकार नारियल या बादाम को ऊपर से देखकर उसके भीतरी स्वरूप का वि लेशण नहीं किया जा सकता , उसी प्रकार कबीर के बाह्य रूप को देखकर , उनकी भर्त्सनामयी कठोर वाणी को पढ़कर , उसके कोमल दयालु अंतर का अनुमान नहीं लगाया जा सकता। उनके व्यक्तित्त्व की भावनाओं में सरल व गूढ़ - दोनों रेखाओं का अनूठा मिलन है। '

जार्ज ग्रियर्सन ने भक्ति आंदोलन पर विचार करते हुए लिखा था कि इसका आगमन ' बिजली की चमक के समान अचानक ' हुआ था। लेकिन हम बता चुके हैं कि भक्ति आंदोलन का आरंभ कोई आकस्मिक घटना नहीं थी। 14 वीं - 15 वीं सदी में भक्ति आंदोलन के जन्म से पहले ही दक्षिण में भक्ति का व्यापक प्रसार हो चुका था। यह सही है कि भक्ति आंदोलन का उदय तत्कालीन परिस्थितियों की देन था , लेकिन इस पर विभिन्न धार्मिक मतों के प्रभाव से भी इंकार नहीं किया जा सकता। भक्ति आंदोलन 14 वीं से 17 वीं सदी के बीच विद्यमान रहा है। इसमें कई धाराएं और उप - धाराएं रही है। हम इनका अध्ययन आगे करेंगे। इससे पहले हमें भक्ति काव्य की सामान्य विशेषताओं का अध्ययन अवश्य कर लेना चाहिए ताकि हम इस बात को अच्छी तरह समझ सकें कि भक्ति काव्य की मामान्य आधारभूमि क्या है।

भक्ति आन्दोलन में कबीर का योगदान

भक्ति आन्दोलन वह आन्दोलन है जिसमें भागवत धर्म के प्रचार और प्रसार के परिणामस्वरूप भक्ति आन्दोलन का सूत्रपात हुआ। भक्ति आन्दोलन ने जन सामान्य को सम्मानपूर्वक जीने का रास्ता दिखाया ए आत्मगौरव का भाव जगाया और जीवन के प्रति सकारात्मक आस्थापूर्ण दृष्टिकोण विकसित किया। देश की अखण्डता और समस्त देशवासियों के कल्याण तथा मानव के समान अधिकारों को अभिव्यक्ति दी। भक्ति आन्दोलन के सम्बन्ध में शिवकुमार मिश्र लिखते हैं -

श यह भक्ति आन्दोलन ए सच पूछा जाए तो अपने समय की राजनीतिक ए धार्मिक और सामाजिक परिस्थितियों की अनिवार्य देन था। वह युग जीवन की ऐतिहासिक मांग बनकर आया। इस तथ्य का अनुमान महज इस बात से लगाया जा सकता है कि इसने न केवल अपने समय की राजनैतिक ए धार्मिक ए सामाजिक जड़ता को तोड़ा ए चली आती हुई सांस्कृतिक जीवन की धारा के साथ विजेताओं की नई संस्कृति को घुलाते - मिलाते हुए पहली बार जाति ए धर्म ए वर्ग ए वर्ण आदि से निरपेक्ष एक मानव धर्म तथा एक मानव संस्कृति की परिकल्पना सामने रखी। इसने शताब्दियों से कुंठित और अपमानित देश के करोड़ों - करोड़ साधारण जनों के लिए उनकी सामाजिक मुक्ति तथा आध्यात्मिकता के द्वार भी उन्मुक्त कर दिए ए समाज तथा धर्म के ठेकेदारों ने जिन्हें उनके लिए कब का बन्द कर रखा था। इस आधार पर यदि यह कहा जाए कि एक स्तर पर यह भक्ति - आन्दोलन रूढ़िग्रस्त धर्म तथा

उसके द्वारा अभिशप्त एक अनैतिक और अमानवीय समाज व्यवस्था के प्रति सामान्य जन के सात्विक शेष तथा उसकी दुर्दम जिजीविषा की भावात्मक अभिव्यक्ति था ए तो अतिशयोक्ति न होगी

इन परिस्थितियों में कबीर के आविर्भाव को रेखांकित करते हुए शिवकुमार मिश्र लिखते हैं रू

श समझौते का रास्ता छोड़कर विद्रोह का रास्ता अपनाते हुए निर्गुण भक्ति की जो धारा भक्ति – आन्दोलन की स्रोतस्वनी से फूटी कबीर उसकी सबसे ऊंची लहर के साथ सामने आए। समझौता उनकी प्रकृति में नहीं था। विद्रोह और क्रांति की ज्वाला उनकी रग – रग में व्याप्त थी सिर पर कफन बाँधकर ए अपना घर फूंककर वे अलख जगाने निकले थे। उन्हें समझौता परस्तों की नहीं ए अपना घर फूंककर साथ चलने वालों की जरूरत थी वे लुकाठी लिए सरे बाजार गुहार लगा रहे थे।

भक्ति आन्दोलन के व्यापक पटल पर कबीर का मूल्यांकन और उनका योगदान रेखांकित करने के लिए हमें कबीर को अन्दर से देखना – परखना होगा ए क्योंकि कबीर ऊपर से एक नजर में जो दिखते हैं उससे कहीं अधिक वो हैं। कबीर को केवल दार्शनिक ए निर्गुण ब्रह्म के प्रतिपादक ए समाज सुधारक ए हिन्दू – मुस्लिम एकता और समन्वय के पुरोधा तथा एक संत के रूप में देखना कबीर के साथ अन्याय करना होगा।

कबीर का मूल्यांकन उन श मूल्यों के आधार पर करना चाहिए जिन्हें विकसित और पल्लवित करने के लिए उन्होंने अपना जीवन समर्पित कर दिया। उस वैचारिक पृष्ठभूमि के आधार पर करना चाहिए जिसके आधार वे अकेले इतना जबर्दस्त विद्रोह कर सके। तमाम सामन्तीय जीवन प्रणाली और पुरोहिती दंभ के विरुद्ध जन सामान्य की प्रतिष्ठा और आत्मसम्मान की घोषणा कर सके। सदियों से अनुप्राणित उस कठोर जमीन को तोड़ने और एक नई उर्वर जमीन को बनाने के प्रयास के आधार पर करना चाहिए जिसे उन्होंने अपने रक्त के आँसुओं से सींचा।

निष्कर्ष

कबीर मध्यकाल के बहुत बड़े विचारक और समाज सुधारक कवि थे साहित्य के इतिहासकारों और आलोचकों ने उनके काव्य का मूल्यांकन करते हुए इस तथ्य का प्रतिपादन किया है। कबीर को ऐतिहासिक संदर्भ से वि लेशित करें तो वे तत्कालीन परिस्थितियों से प्रतिबद्ध दिखाई देते हैं। उनकी यह प्रतिबद्धता उस समय की जागरुकता से जुड़ी हुई थी। उन्हें इसी द्रष्टि से समाज सुधारक की संज्ञा भी दी जाती है। यह भी सच है कि भक्ति आंदोलन समाज सुधार का आंदोलन था और समस्त संत कवि समाज सुधारक थे। वे समाज के विभिन्न शिथिल परम्पराओं , रूढ़ियों और जाति – पाँति को समाप्त कर स्वस्थ समाज की रचना करना चाहते थे। उनके काव्य में सरल , सहज और व्यावहारिक जीवन जीते हुए मानवता वाद की प्रेरणा ली गई है। इसी कल्पना में कबीरदास कहीं – कहीं पर क्रांतिकारी रूप में सामने आते हैं।

संदर्भ

1. डॉ . द्वरिका प्रसाद सक्सेना , हिन्दी के प्राचीन प्रतिनिध कवि , विनोद पुस्तक मंदिर , आगरा 1977
2. डॉ . श्री निवास शर्मा , हिन्दी साहित्य का इतिहास , लक्षशिला प्रकाशन , इनदिल्ली 1978
3. डॉ . किशोरी लाल , घनानंद काव्य एवं आलोचना , साहित्य भवन , इलाहबाद 1980

4. डॉ . महेन्द्र कुमार , रीतिकालीन रीति कवियों का काव्यशिल्प आर्य बुक डिपों , नई दिल्ली काव्य शिल्प 1980

5. डॉ . प्रतिभा चतुर्वेदी , डॉ . हरिमोहन बुधोलिया , डॉ . सरला मिश्रा , हिन्दी भाषा साहित्य का इतिहास , म . प्र . हिन्दी ग्रंथ एकेडमी तथा काव्यंग विवेचन भोपाल , 2005

6. कबीर गंगावली संव डाण्यामसुंदर दास वाराणती , सं 2034

7. कबीरगंयावनी सैव डॉ . पारसनाथ तिवारी पयाय , 1961

8. कबीरग्रंथावली डामाता प्रसाद गुप्त आगरा , 1969

9. संत कबीर संव डॉ . रामकुमार वर्मा इलाहाबाद , 1966

10. कबीर पीक सं डॉ . मुकदेव सिंह इलाहाबाद , 1972

11. कबीर बाइस्य सं डॉ . अपदेव सिंह , डॉ . वासुदेव सिंह वाराणसी , 1980